प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा : एक वैचारिक खोज

किन्नरी पंड्या

छोटे बच्चों के लिए शिक्षा का अर्थ है कि दुनिया से जुड़ने में उनकी मदद की जाए, और एक सतत प्रक्रिया के रूप में उन्हें स्वयं इसका अर्थ समझने में सक्षम बनाया जाए। इस लेख में आप पढ़ेंगे कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह *'सीखना कैसे सीखा जाए'*, इसे सीखने के कौशल के रूप में विकसित करने में बच्चों की मदद करे।

चित्र 1 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था के बच्चों का खेल-खेल में सीखने का अलग ही महत्त्व है

मानव विकास पर हुए शोध से पता चलता है कि प्रारम्भिक वर्ष, विशेष रूप से शुरुआती 8 वर्ष की आयु का समय, जीवन का सबसे प्रभावशाली समय होता है। इन वर्षों में बच्चे को जो भी अनुभव मिलते हैं, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, उन सभी का उसके आने वाले जीवन के अनुभवों और परिणाम से सीधा सम्बन्ध होता है। यह अनुभव व परिणाम कई रूपों में हो सकते हैं, जैसे–

- सम्पूर्ण स्वास्थ्य और वृद्धि के सूचक के रूप में;
- दिमाग़ की क्षमता के बेहतर (optimal) विकास के रूप में;
- घर के बाहर की दुनिया से सामाजिक व भावनात्मक स्तर पर जुड़ाव बनाने की तैयारी के रूप में; या
- अपने परिवेश को समझने के लिए ज़रूरी ज्ञान और क्षमता / कौशल हासिल करने के रूप में; या
- विद्यालयी शिक्षा पूरी करने और क्रियाशीलता की क्षमता के रूप में।

जीवन में प्रारम्भिक वर्षों के महत्त्व को ध्यान में रखते यह समझना ज़रूरी है कि 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा मिलनी चाहिए; उन्हें किस तरह के सीखने के मौक़े मिलने चाहिए; और उनके लिए 'शिक्षण अधिगम' का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या होना चाहिए; आदि। इस विषय पर कई अलग-अलग विचार रहे हैं। कभी-कभी ये विचार अस्पष्ट भी रहें हैं। उदाहरण

> **यह याद रखना ज़रूरी है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) का प्रारम्भिक बिन्दु और अन्तिम लक्ष्य 'विकासशील बच्चा' है, न कि विषयवस्तु।**

के लिए, क्या इस आयु वर्ग के बच्चों को घर पर आज़ादी से खेलने देना चाहिए; या उन्हें जल्द-से-जल्द तीन आर (R) यानी पढ़ना (Reading), लिखना (wRiting) और अंक गणित (aRithmetic) की संक्रियाएँ सिखा देनी चाहिए।

लेकिन दुर्भाग्य से, इनमें से कोई भी विचार इस बात पर ध्यान नहीं देता कि 3 से 6 आयु वर्ग के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा यानी (ECE- Early Childhood Education) कैसी होनी चाहिए। आइए, समझने की कोशिश करें कि इन प्रारम्भिक वर्षों में 'शिक्षा' में कौन-कौन सी बातें शामिल हो सकती है?

प्रारम्भिक शिक्षा का फ़ोकस

3 से 6 आयु वर्ग की शिक्षा में शामिल की जाने वाली बातों को समझने के लिए यह याद रखना ज़रूरी है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा का प्रारम्भिक बिन्दु और अन्तिम लक्ष्य 'विकासशील बच्चा' है, न कि 'विषयवस्तु'। सही वातावरण और सहयोग से बनी पढ़ने-लिखने और गणित में कुशलता, बाद के विद्यालयी विषयों की बुनियाद होती है।

प्रारम्भिक वर्षों (3-6 वर्ष) में शिक्षा तीन पहलुओं पर केन्द्रित होती है :

1. अच्छी तरह से 'विकसित' हो रहे बच्चे को सीखने और विकास के लिए मदद करना ताकि वे विकास की अपनी क्षमता को प्राप्त कर सकें।
2. बच्चों की यह सीखने में मदद करना कि सीखते कैसे हैं या सीखा कैसे जाता है।
3. बच्चों को उनके मौजूदा परिवेश और उनकी रुचियों के आधार पर विषयवस्तु को प्रस्तुत करना।

आइए, ईसीई के उन तीन उद्देश्यों को विस्तार से समझते हैं जिन्हें पूरा करने का प्रयास प्रारम्भिक बाल्यावस्था पाठ्यचर्या को करना चाहिए।

आइए, इस तरह समझते हैं :

एक विकसित होता हुआ 3 साल का बच्चा सरल, छोटे वाक्य बोलना, अपनी ज़रूरतें व्यक्त करना, और वाक्यों व वाक्यांशों को दोहराना सीख रहा होता है। इस उम्र में बच्चा ज़्यादातर अकेले खेलना पसन्द करता है। धीरे-धीरे, अगले तीन सालों में, वह आस-पड़ोस के दूसरे बच्चों के साथ, बड़ों के साथ और अपने प्ले ग्रुप के शिक्षकों के साथ बातचीत करना व खेलना सीखने लगता है। जैसे-जैसे बच्चे की भाषा समृद्ध होती है, वह अपने सवालों को स्पष्ट रूप से रख पाता है। कुछ 'क्यों' होता है, इसका जवाब ढूँढ़ता है। चाँद आकार क्यों बदलता है; जब हम बस में होते हैं तो चाँद हमारे साथ-साथ क्यों चलता है; पत्तों के रंग अलग-अलग क्यों होते हैं; घड़ी काम करना बन्द क्यों नहीं करती; गेंद हमेशा नीचे क्यों गिरती है; आदि। अर्थात् वह प्रश्न का अर्थ और व्याख्या ढूँढ़ रहा होता है।

इसके अलावा, बच्चा स्वतंत्र रूप से अपनी देखभाल करने के कौशल सीख रहा होता है। उदाहरण के लिए, अपने कपड़े ख़ुद पहनना, सभी तरह के भोजन को साफ़-सुथरे ढंग से खाना, अपने सामान की देखभाल करना, भावनाओं और ज़रूरतों को व्यक्त करना, भावनाओं को नियंत्रित करना, आदि। वह अपनी ज़रूरतें, पसन्द-नापसन्द ज़ाहिर करता है, अपने बारे में बात करना शुरू करता है कि 'मैं ऐसा हूँ!', कामों की पहल करने लगता है, और अपने परिवेश की चीज़ों में सक्रिय रूप से शामिल होता है।

वह बच्चा जो पहले अपने आस-पास की लगभग हर चीज़ का जवाब ढूँढ़ता था, और रोज़ाना की गतिविधियों के लिए ज़्यादातर बड़ों पर निर्भर रहता था, वह 3 से 6 साल की उम्र के बीच धीरे-धीरे ज़्यादा स्वतंत्र हो जाता है। वह रोज़ाना के ज़्यादातर काम ख़ुद कर लेता है, लगभग 5000 शब्दों को समझने लगता है, और किसी घटना या कहानी को विस्तार व भावों के साथ व्यक्त कर सकता है। जो बच्चा अपनी कमीज़ के बटन नहीं लगा पाता था, अब वह ज़्यादा जटिल व समन्वित काम करने के लिए तैयार हो जाता है। जैसे कि बड़ी सुई से सिलाई करना, जूते के फ़ीते बाँधना, आदि। जिस बच्चे को ऊँचाई से कूदने के लिए मदद की ज़रूरत पड़ती थी, 5 साल की उम्र में वही बच्चा बिना किसी मदद के आराम से कूद सकता है, या पेड़ पर भी चढ़ सकता है।

उपर्युक्त उदाहरण में हम क्या देखते हैं ?

हम देखते हैं कि तीन साल के इस समय में बच्चा तेज़ी से विकसित होने लगता है। इस दौरान उसका सिर्फ़ शारीरिक विकास ही नहीं होता बल्कि एक गुणात्मक परिवर्तन भी होता है। यानी इस दौरान संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, भाषाई, शारीरिक व गत्यात्मक क्षमताएँ और रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ साथ-साथ विकसित होने लगती हैं। ये सारे क्षेत्र एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। उदाहरण के लिए, जो बच्चा भावनाओं को नियंत्रित और नियमित करने में सक्षम है, ग़ुस्सा नहीं करता, या ज़्यादा रोता नहीं है, सामाजिक है, दूसरे बच्चों के साथ अधिक खेलता है, आस-पास के बड़े लोगों का ध्यान आकर्षित करता है, ऐसे बच्चे को बोलने और अभिव्यक्ति के ज़्यादा अवसर मिलेंगे जिनसे उसकी मौखिक भाषा क्षमताओं का विकास होगा। अपने आस-पास के लोगों, चीज़ों, स्थानों, प्रक्रियाओं के साथ बच्चे की दोतरफ़ा अन्त:क्रिया और उसको मिलने वाली मदद उसके इस विकास की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। ये अन्त:क्रियाएँ उसके बड़े होने पर उसमें सकारात्मक, नकारात्मक या प्रतिगामी परिवर्तन ला सकती हैं। इस समझ के साथ, और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री के रूप में, यह प्रश्न करना उचित है कि इस अवधि में बच्चों के विकास के लिए सबसे सार्थक मौक़े क्या हैं।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था पाठ्यचर्या

इस हिस्से में ईसीई पाठ्यचर्या के लिए ज़रूरी तीन उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से रखने की कोशिश की गई है। ये उद्देश्य बच्चों के सीखने को सार्थक और प्रासंगिक बनाने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले शिक्षणशास्त्र तथा विषयवस्तु को भी तय करने में मदद करते हैं। ये हैं :

1. अच्छी तरह से 'विकसित' हो रहे बच्चे को सीखने और विकास के लिए मदद करना

जैसी कि ऊपर चर्चा की गई है, बच्चे, विकास के विभिन्न क्षेत्रों में तेज़ी से विकसित होते हैं। विकास क्षेत्रों के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं। इनका उपयोग यह तय करने के लिए किया जा सकता है कि किन क्षेत्रों में बड़ों की, सहायता की आवश्यकता है, ख़ासकर ईसीई कार्यकर्त्रियों की।

1.1 स्थूल (बड़ी) माँसपेशियों का विकास

जो बच्चा किसी सहारे या मदद के साथ कूद सकता है, उसे स्वतंत्र रूप से कूदना सीखने के अवसरों की आवश्यकता होती है। जो बच्चा गेंद फेंकने, कैच करने या उसे पकड़ने का खेल सीख रहा है, उसे ऐसे अनुभव की आवश्यकता होती है जिससे वह लक्ष्य पर 'निशाना' लगा सके। इस अवधि में स्थूल-गतिशील विकास के प्रमुख लक्ष्य, बड़ी माँसपेशियों का विकास, सन्तुलन, समन्वय, शक्ति और सहने का धैर्य हैं।

1.2 सूक्ष्म (छोटी) माँसपेशियों का विकास

छोटी माँसपेशियों जैसे कि हाथ-पैर की उँगलियों की शक्ति का विकास, और इनका आँखों के साथ समन्वय, विकास के इस चरण का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। मोती पिरोना, जूतों के फ़ीते बाँधना, कटोरे में एक साथ रखे हुए छोटे-छोटे दानों / बीजों / कंकड़ों को छाँटना, साथ ही छोटे-छोटे तिनके, पत्ते और कंकड़ उठाकर उन्हें दिए गए पैटर्न अनुसार जमाना, आदि गतिविधियाँ इन छोटी माँसपेशियों को विकसित करने में मदद करती हैं। इन कार्यों को करने में आँख और हाथ का समन्वय महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इनमें वस्तुओं को अलग करना / छाँटना / अन्तर करना शामिल होता है। ये गतिविधियाँ बाद में, लम्बे समय तक पेंसिल पकड़ने और लिखने के लिए ज़रूरी शक्ति विकसित करने में मददगार होती हैं। वस्तुओं या चित्रों के बीच अन्तर करने से बच्चों को भाषा-लिपियों से परिचित होने पर अक्षरों की पहचान करने में मदद मिलती है।

1.3 संवेदी–अवधारणात्मक विकास

छोटे बच्चों की पाँचों इन्द्रियों–दृष्टि, स्पर्श, गन्ध, ध्वनि और स्वाद–का विकास कई तरह के अनुभव प्राप्त करने से होता है। जैसे–

- रंगों को देखने या मिलाने से;
- चित्र में अन्तर करने या ग़लतियाँ ढूँढ़ने से;
- आकार और आकृति के आधार पर वस्तुएँ छाँटने से;
- वस्तुओं की बनावट की पहचान करने से; जैसे गर्म / ठण्डा, चिकना / खुरदुरा;
- छूने सम्बन्धी अन्य अनुभव करने से;
- तरह-तरह की गन्धों–अच्छी / ख़राब, ख़ुशबू / बदबू की पहचान करने से;
- गन्धों के स्रोत, जैसे फूल, भोजन आदि को पहचानने से;
- विभिन्न प्रकार की खाने वाले की चीज़ों को चखने और उनके स्वाद के नाम बताने से; वग़ैरह।

अवधारणात्मक विकास के लिए सभी संवेदी खोजों में लगातार संज्ञानात्मक (सोचने) अनुभव की आवश्यकता होती है। साथ ही दूरी, समय, भार, आदि अवधारणाओं का आकलन करने में भी इसकी ज़रूरत पड़ती है। उदाहरण के लिए, कोई चीज़ कितनी दूर है, कितनी पास है, कितनी भारी या हल्की है, आदि। संज्ञानात्मक क्षमता तथा भाषा व शब्दावली के विकास का संवेदी अवधारणात्मक अनुभव के साथ गहरा सम्बन्ध है।

1.4 संज्ञानात्मक विकास

सोचने और समस्या-समाधान की क्षमताएँ विकास का एक ऐसा पहलू हैं जो अन्य क्षमताओं के साथ, छोटे बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया को समझने में मदद करती हैं। ये अन्तर करने, क्रमबद्ध करने, छाँटने, अनुक्रम और पैटर्न का पता लगाकर समस्या हल करने या कारण और प्रभाव पर विचार करने की क्षमताएँ हैं। उदाहरण के लिए, फेंकने पर चीज़ें क्यों गिरती हैं; स्याही की एक बूँद से पानी का रंग क्यों बदल जाता है; बारिश क्यों होती है; ये सवालों के ऐसे उदाहरण हैं जो बच्चों के मन में आ सकते हैं। वयस्कों के सहयोग से इन पर विचार करना छोटे बच्चों में संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसलिए नहीं कि उन्हें केवल 'सही' उत्तर याद रखने हैं, बल्कि इसलिए कि बच्चों को व्यवस्थित रूप से तर्क करने में मदद मिल सके। इनमें से कई अनुभव उन्हें अवधारणाएँ सीखने में मदद करते हैं। विशेष रूप से स्थान, समय और वस्तुओं की प्रारम्भिक गणितीय अवधारणाओं को सीखने में। साथ ही ये गिनने और अंकगणित के लिए आधार तैयार करते हैं। बच्चों की देखभाल करने वाले ऐसे जानकार वयस्क बच्चों में उन्नत सोच-कौशल विकसित करने के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं जो बच्चों के प्रश्नों की सराहना करते हैं, और पूछताछ की प्रक्रिया में उनके साथ जुड़ते हैं।

1.5 भाषा और साक्षरता विकास

भाषा का विकास तब होता है जब बच्चे बड़ों से रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के अलग-अलग पहलुओं पर बात करते हैं, और लगातार अपनी शब्दावली का विस्तार करते हैं। जब उन्हें अभिव्यक्त करने, सुनने, समझने और रोज़मर्रा की घटनाओं को अलग-अलग तरह की अभिव्यक्ति के साथ जोड़कर गीत, कहानियाँ और कविताएँ बनाने के अवसर मिलते हैं तब उनकी भाषा का विकास होता है।

साक्षरता यानी पढ़ने-लिखने की समझ व क्षमता विशिष्ट होती है। यह मौखिक भाषा विकास पर आधारित होती है। मौखिक भाषा का विकास (सुनना और बोलना) पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करता है। सभी बच्चे पढ़ना (दृश्य संकेतों का अनुमान लगाना) तब शुरू करते हैं जब वे अपने आस-पास

चित्र 2 : सभी बच्चों को खेल और गतिविधियों में शामिल होने के अवसर मिलना ज़रूरी है

की चीज़ों को पहचानते हैं, और उनमें अन्तर करते हैं। लेकिन ध्वनियों और सम्बन्धित लिपियों का परिचय औपचारिक रूप से करवाना होता है, और इसके लिए व्यवस्थित योजना एवं उपयुक्त अवसरों की आवश्यकता होती है।

1.6 सामाजिक–भावनात्मक सीखना

बच्चे में बहुत कम उम्र से स्वयं ही अनुभूति या एहसास विकसित होने लगता है। इसलिए छोटे बच्चों को सामाजिक-भावनात्मक विकास के बहुत सारे पहलूओं को जानने-समझने में सहायता की आवश्यकता होती है। जैसे, मैं कौन हूँ; मुझे क्या पसन्द है और क्या नापसन्द है; मैं दूसरों के साथ कैसे जुड़ता / जुड़ती हूँ; विभिन्न भावनाओं और अनुभूतियों की पहचान करना और इन्हें शब्द / लेबल देना; विभिन्न परिस्थितियों में–साथियों के साथ, वयस्कों के साथ, घर के बाहर, औपचारिक परिवेश में–कैसे व्यवहार करना चाहिए; आदि।

भावनाओं को नियंत्रित करना, दूसरों की देखभाल करना, क्या सही है और क्या ग़लत, तथा अपने कार्यों के परिणाम समझना, ये सब ऐसे अन्य पहलू हैं जिनके बारे में वयस्कों द्वारा बच्चों को मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। हालाँकि ये क्षेत्र-विशिष्ट विकास एक दूसरे से 'अलग' और 'विशिष्ट' लग सकते हैं, लेकिन दैनिक जीवन और परिस्थितियों में ये साथ-साथ होते रहते हैं, और एक दूसरे पर निर्भर हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और *फ़ाउण्डेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) 2022* में बुनियादी वर्षों हेतु प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश और रास्ते बताए गए हैं, जिनमें 3 से 6 वर्ष के शाला-पूर्व / आँगनवाड़ी बच्चे और 7-8 वर्ष के प्रारम्भिक प्राथमिक कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थी शामिल हैं।

2. बच्चों की यह सीखने में मदद करना कि सीखते कैसे हैं या सीखा कैसे जाता है ?

छोटे बच्चों के लिए शिक्षा का अर्थ है कि दुनिया से जुड़ने में उनकी मदद की जाए, और एक सतत प्रक्रिया के रूप में उन्हें स्वयं इसका अर्थ समझने में सक्षम बनाया जाए। इसके लिए शिक्षिका ऐसी होना चाहिए कि वह 'सीखना कैसे सीखा जाए', इसे सीखने के कौशल के रूप में विकसित करने में बच्चों की मदद करे। बच्चों को सही उत्तर दे देना या उनसे सही उत्तर की अपेक्षा करना उद्देश्य नहीं है। उद्देश्य यह है कि उत्तर खोजने की क्षमता विकसित करने में बच्चों की मदद की जाए, और खोजने की क्षमता के लिए आवश्यक भाषा और तर्क कौशल के विकास में उनकी सहायता की जाए।

2.1 ध्यानपूर्ण अवलोकन

जो हो रहा है उस पर ध्यान केन्द्रित या एकाग्र करना छोटे बच्चों के लिए एक महत्त्वपूर्ण कौशल है। यह बात बच्चों के लिए कठिन है, और इसे विकसित करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। बच्चों को अपने आस-पास के कीड़े-मकोड़ों और सूक्ष्म वस्तुओं का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित करना, इन अवलोकनों के बारे में बात करना, और उनके अवलोकनों को स्वीकार करना एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक अभ्यास है।

2.2 अनुकरण और पुनरावृत्ति

बच्चे ख़ुद कार्य करके सीखते हैं। आनन्द पाने के लिए और किसी नई चीज़ में महारत हासिल करने के लिए उसे दोहराते हैं। वयस्कों के व्यवहार की नक़ल करना, उदाहरण के लिए, बात करना, चलना, खाना, एक्शन गीत, सन्तुलन बनाना और पैर की उँगलियों पर चलना–ये सब बच्चे ख़ुश होने के लिए दोहराते हैं, और किसी भी नई और दिलचस्प गतिविधि में सहज होने के लिए ऐसा करते हैं। बच्चों की एक दिनचर्या बने, इसकी आदत बनाने के लिए भी दोहराव और अभ्यास की आवश्यकता होती है। देखभाल करना और संवेदनशीलता जैसी बातें भी वे वयस्कों के व्यवहार को देखकर और अनुकरण करके सीखते हैं। वयस्कों को सावधानीपूर्वक व्यवहार या मॉडलिंग करनी चाहिए ताकि बच्चे उनके व्यवहार का अनुकरण कर सकें, और उससे सीख सकें।

2.3 प्रयास और ग़लतियाँ

जैसा कि हमने पहले भी कहा, बच्चे करके सीखते हैं। पर उनकी माँसपेशियों की ताक़त और तालमेल अभी भी धीरे-धीरे विकसित हो रहे होते हैं। भले ही बच्चे कोई काम करने में असफल हों, लेकिन दोहराने, ग़लतियाँ करने और कठिन कामों को आज़माने के अवसर देना ज़रूरी है तभी उन्हें कठिन और चुनौतीपूर्ण काम करने और सरल कामों को करने में आत्मविश्वास हासिल करने में मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए, एक गिलास से दूसरे गिलास में पानी डालना, चम्मच में नींबू रखकर चलना, प्रयास और सहारे के साथ चढ़ना, ये सभी तरह-तरह के अनुभव और ग़लतियाँ करने के अवसर उन्हें स्वतंत्र रूप से काम करना 'सीखने' में मदद करते हैं।

2.4 प्रश्न पूछना, जिज्ञासा करना

बच्चे जिज्ञासु होते हैं। अपने आस-पास की खोजबीन एक सक्रिय और लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। भाषा के विकास के साथ, उनकी जिज्ञासा प्रश्नों का रूप ले लेती है। उनके जीवन में मौजूद ज़िम्मेदार और देखभाल करने वाले वयस्कों को चाहिए कि वे बच्चों को सार्थक संवादों में शामिल करें, एक दूसरे से सवाल पूछें (जब कोई बच्चा सवाल पूछता है तो वयस्क बच्चों को आगे सोचने में मदद करने के लिए उस जानकारी से सम्बन्धित और सवाल पूछते हैं), उनकी पूछताछ के बिन्दुओं को धैर्यपूर्वक आगे

ले जाना और ऐसी शब्दावली का उपयोग करना जिसे बच्चा समझता हो, ये सारी बातें सीखने की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है।

2.5 जो देखा, सीखा और किया उसे व्यक्त व साझा करना

हमने जो देखा, सीखा और किया है, उसे व्यक्त करना, और साझा करना एक विशेष मानवीय गुण है। इसे विकसित करने में कई बातें महत्त्वपूर्ण हैं जैसे बच्चों से घर और विद्यालय में उनके अनुभवों के बारे में बात करना, गीतों या कहानियों का उपयोग करना, आड़ी-तिरछी रेखाओं और चित्रों के माध्यम से लिखित या दृश्य अभिव्यक्तियाँ करना। यह बाद में लिपि और लेखन के रूप में विकसित होती हैं। मिट्टी, काग़ज़ और अन्य संसाधनों का उपयोग करके वस्तुएँ बनाना, आदि। छोटे बच्चों के साथ काम करते समय उन्हें उनकी अपनी भाषा में ख़ुद को अभिव्यक्त करने का अवसर देना भी एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक अभ्यास है।

3. बच्चों को उनके मौजूदा परिवेश और उनकी रुचियों के आधार पर विषयवस्तु को प्रस्तुत करना

बच्चों की शिक्षा उनके आस-पास के माहौल पर आधारित होनी चाहिए। उनकी जिज्ञासाएँ और रुचियाँ उनके आस-पास की चीज़ों में निहित होती हैं। ईसीई पाठ्यचर्या का उद्देश्य बच्चों की इस बात में मदद करना है कि वे इन जिज्ञासाओं और रुचियों को पूरा कर सकें। यह शाला-पूर्व / आँगनवाड़ी / बालवाड़ी में शुरुआती वर्षों के पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को व्यवस्थित करने का एक प्रमुख मार्गदर्शक सिद्धान्त है। यही वह सिद्धान्त है जिसका पालन *एनसीएफ़-एफ़एस 2022* और अन्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्याओं ने अपने दिशानिर्देशों में किया है।

बच्चे के आस-पास की अवधारणाओं और घटनाओं पर आधारित सिद्धान्त उनकी जिज्ञासाओं को पूरा करने, और उनके आस-पास के परिवेश व अनुभवों को अर्थपूर्ण बनाने में मदद करते हैं। यह उनके घर व विद्यालय के अनुभवों को निरन्तरता प्रदान करता है। उनके घर और पारिवारिक परिवेश पर ध्यान केन्द्रित करना—मैं और स्वयं, हमारा भोजन, अपने आस-पास दिखने वाले जानवर और पौधे, वाहन, मौसम, आदि पाठ्यचर्या के उपयोगी विषय हैं। विषयवस्तु की थीम-आधारित रचना इस विचार से उत्पन्न होती है कि बच्चों को उन चीज़ों में शामिल किया जाए जो उनके लिए उपयुक्त और प्रासंगिक हैं, तथा जैसा वे अपने परिवेश में अनुभव करते हैं।

एक ही अवधारणा की खोज करने के लिए बच्चों को बार-बार, अलग-अलग तरह के अवसर देना उपयोगी होता है। जैसे अवधारणा को दोहराने वाले, जो सीखा है क्रमश: उससे आगे के स्तर के, आदि। उदाहरण के लिए, 3 साल के बच्चे के साथ वाहनों पर की जाने वाली चर्चा 5 साल के बच्चे से की जाने वाली चर्चा से अलग होगी। छोटे बच्चों के लिए ध्वनियाँ, आस-पास दिखाई देने वाले वाहन, उनके नाम जानना, आदि महत्त्वपूर्ण होंगे, जबकि 5 साल के बच्चों के लिए कुछ ज़्यादा मुश्किल पहलू, जैसे वाहनों का आकार, परिवहन के तरह-तरह के साधन, आदि ज़्यादा दिलचस्प रहेंगे। कोशिश यह नहीं है कि छोटे बच्चों को वाहनों के काम करने के हर विवरण के बारे में निपुण बनाया जाए, बल्कि उन्हें इस तरह उत्साहित किया जाए ताकि वे अपने आस-पास की विभिन्न चीज़ों और घटनाओं के बारीक़ विवरणों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित हो सकें।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के इन उद्देश्यों को कैसे प्राप्त करें?

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा का मूल विचार यह है कि शिक्षा को बच्चों के वर्तमान कार्यों और गतिविधियों के सन्दर्भ में रखा जाए। इस आयु वर्ग के बच्चे कई प्रकार के खेलों में भाग लेते हैं। ईसीई के उपर्युक्त सभी उद्देश्यों को खेल के माध्यम से सीखते हुए और शैक्षणिक योजना के अनुसार प्राप्त करना सम्भव है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के दिशानिर्देश* और *एनसीएफ़-एफ़एस 2022,* विशेष रूप से 3-6 वर्ष के बच्चों के फ़ाउण्डेशनल स्टेज शिक्षणशास्त्र के लिए अनुपम / बेमिसाल दृष्टिकोण के रूप में खेल पर आधारित शिक्षा की सिफ़ारिश करते हैं।

अन्त में, प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यकर्ताओं के रूप में, यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि :

1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा 'विद्यालय' और विषय-आधारित शिक्षा के समान नहीं है।
2. साक्षरता और संख्या ज्ञान प्रारम्भिक वर्षों के सीखने के लक्ष्यों में से एक लक्ष्य हैं, न कि सीखने का एकमात्र लक्ष्य।
3. कक्षा का ढाँचागत, भयपूर्ण और तनावपूर्ण माहौल बच्चों के समग्र विकास और सीखने के लिए नुक़सानदायक है। शिक्षण अधिगम की ऐसी धारणा से मुक्त होना ज़रूरी है।
4. खेल में महत्त्वपूर्ण क्षमता होती है और ऐसा ख़ुशनुमा वातावरण बच्चों के प्रारम्भिक वर्षों में सीखने में मददगार हो सकता है। हमें चाहिए कि कार्यकर्ताओं के रूप में हम इस क्षमता को पहचानें, और सीखने का समावेशी वातावरण बनाने की दिशा में काम करें।

आभार : जिगिशा शास्त्री, इरा जोशी और ईसीसीई में काम करने वाले अपने विद्यार्थियों और सहकर्मियों के प्रति आभार जिनसे हुई चर्चाओं के कारण यह लेख लिखा गया है।

किन्नरी पंड्या अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के स्कूल ऑफ़ एजुकेशन में प्राध्यापक हैं। उनका कार्य उच्च शिक्षा कार्यक्रम विकास, शिक्षण, शोध, क्षेत्रीय हस्तक्षेप कार्यक्रम और प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा नीति पर केन्द्रित है।

सम्पर्क : kinnari@apu.edu.in